नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

खंडवा : इतिहास की छाया में नई सुरक्षा चुनौती

खंडवा जिला मध्य प्रदेश का वह इलाका रहा है जो अपनी भौगोलिक स्थिति और सामाजिक बनावट के कारण हमेशा से सुरक्षा एजेंसियों की दृष्टि में संवेदनशील रहा है. नर्मदा और सतपुड़ा के बीच बसा यह क्षेत्र कभी सीधा-सादा प्रशासनिक केंद्र माना जाता था, लेकिन बीते दो दशकों में यहां की छवि कई बार राष्ट्रीय सुरक्षा बहसों का हिस्सा रही है. अब हाल ही में बरामद हुए नकली नोटों के बड़े जखीरे और मदरसे से इमाम की गिरफ्तारी ने एक बार फिर उस पुराने इतिहास को ताजा कर दिया है.

अतीत में खंडवा को स्टूडेंट्स इस्लामिक मूवमेंट ऑफ इंडिया (सिमी) का महत्त्वपूर्ण गढ़ माना जाता रहा है. संगठन के कई प्रमुख सदस्य इसी क्षेत्र से जुड़े रहे, और 2013 के आसपास सिमी से जुड़े कई आरोपियों की खंडवा जेल से भागने की घटना ने पूरे देश में चिंता की लहर पैदा की थी. इसके बाद राष्ट्रीय जांच एजेंसी और राज्य की एटीएस ने यहां लंबे समय तक कार्रवाई की. खंडवा का नाम तब से राष्ट्रीय सुरक्षा मामलों में बार-बार सुना जाने लगा. इसी पृष्ठभूमि में जब नकली नोटों की बड़ी बरामदगी की खबर सामने आई, तो यह केवल आर्थिक अपराध का मामला नहीं लग रहा. फेक इंडियन करेंसी नोट्स के जरिए आतंकवादी संगठन अक्सर अपने नेटवर्क की फंडिंग करते रहे हैं. यह भी संभव है कि नकली नोटों का यह रैकेट किसी व्यापक साजिश का हिस्सा हो, जिसके तंतु सीमा पार तक फैले हों. इस मामले में जिस इमाम की गिरफ्तारी हुई है, उसकी भूमिका और सम्पर्कों की गहराई से जांच जरूरी है.

यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या यह केवल अवैध मुद्रा का धंधा है, या फिर इसके पीछे किसी पुनरुत्थानशील नेटवर्क की चाल है. आतंकवाद के नए चेहरे अब धार्मिक, सामाजिक या आर्थिक गतिविधियों की आड़ में अपने निशान मिटाने में निपुण हैं. अतः यह जांच सतही न होकर बहु-आयामी दृष्टिकोण से की जानी चाहिए. राज्य और केंद्र की खुफिया एजेंसियों के पास इस क्षेत्र का लंबा रिकॉर्ड है. उन्हें यह परखना होगा कि कहीं पुराने निष्क्रिय नेटवर्क फिर से सक्रिय तो नहीं हो रहे.

मध्य प्रदेश भले ही पिछले वर्षों में आतंकी घटनाओं से अपेक्षाकृत सुरक्षित रहा हो, लेकिन खंडवा और आसपास के इलाकों में गतिविधियों का पुनर्जीवन पूरे क्षेत्र की स्थिरता को प्रभावित कर सकता है. इस संदर्भ में स्थानीय पुलिस, खुफिया विभाग, और केंद्रीय एजेंसियों के बीच बेहतर समन्वय अनिवार्य है. जांच केवल गिरफ्तारी या बरामदगी पर सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि इसके वित्तीय स्रोतों, सम्पर्क श्रृंखलाओं और संभावित विदेशी कड़ियों का विश्लेषण किया जाना चाहिए. डिजिटल व्यवहार, बैंकिंग नेटवर्क और आपराधिक सर्विलांस जैसी आधुनिक तकनीकों का समुचित उपयोग करने की दरकार है.

खंडवा के उदाहरण से एक बड़ा सबक यह मिलता है कि सुरक्षा केवल कानून व्यवस्था का प्रश्न नहीं, बल्कि सामाजिक जागरूकता का भी विषय है. यदि समुदाय, प्रशासन और खुफिया एजेंसियां परस्पर विश्वास और सहयोग का वातावरण बनाए रखें तो ऐसे नेटवर्क लंबे समय तक पनप नहीं सकते. कुल मिलाकर खंडवा की यह घटना केवल नकली नोटों की तस्करी का मामला नहीं, बल्कि हमारे सुरक्षा ढांचे की परीक्षा है. इतिहास की संवेदनशील विरासत के बीच यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि किसी भी आतंकी या राष्ट्रविरोधी तत्व को दोबारा इस भूमि पर जगह न मिले, यही आधुनिक भारत की सुरक्षा नीति की बुनियादी कसौटी होनी चाहिए.

बिहार चुनाव में बाहुबलियों की बहार

दिलीप झा

> कांग्रेस की जमीनी हकीकत यह है कि कार्यकर्ताओं में भारी नाराजगी है. अब राहुल और तेजस्वी की एक साथ संयुक्त रूप से रैली या सभा भी नहीं होने वाली है. क्योंकि कांग्रेस आलाकमान को पता है कि राजद का साथ उनके विधायक अभी भी छोड़ रहे हैं तो दाल में कुछ कला जरूर है. राजद में पारिवारिक लड़ाई ने ऐसी अंगड़ाई ली है? कि वह रुकने का नाम नहीं ले रही है. हालांकि इस बार बिहार की जनता पर भी पूरे देश के लोगों की निगाहें बनी हुई कि वे किस तरह की राजनीति को पसंद करते हैं. क्योंकि अगले साल कुछ और राज्यों में चुनाव होने हैं और एक राज्य के जनादेश का संदेश दूसरे राज्यों में भी थोड़ा बहुत जाता ही है.

बिहार चुनाव में पहले चरण का मतदान 6 नवंबर को और इसमें 423 उम्मीदवार दागी हैं जिन्हें 4 तक अपने ऊपर आपराधिक मामलों का ब्यौरा चुनाव आयोग को देना था. ये ब्योरा पार्टी की वेबसाइट, अधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल और अखबारों के माध्यम से सार्वजनिक करनी थी. इस संदर्भ में कवायद शुरू हुई तो लालू की राजद ने अबतक 101, कांग्रेस ने 41, जदयू ने 25 और बीजेपी ने 24 उम्मीदवारों का आपराधिक ब्योरा निर्धारित फॉर्म में वेबसाइट पर अपलोड किया है. शेष ने क्या किया, यह तो बाद में पता चलेगा. पहले चरण के चुनाव मैदान में खड़े 1314 में से 423 (32 फीसदी) उम्मीदवारों के ऊपर आपराधिक मामले दर्ज हैं.

सबसे हैरत की बात है कि इनमें 354 (27 फीसदी) पर गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं. इनके विरुद्ध हत्या, अपहरण भ्रष्टाचार, बलात्कार, गैर जमानती और पांच साल या उससे अधिक सजा मामलों के केस दर्ज हैं. कहने का आशय यह है कि हर दल में आपराधिक छवि के उम्मीदवारों की भरमार है. इसके साथ ही 25 फीसदी यानी 117 निर्दलीय उम्मीदवारों पर भी आपराधिक मामले दर्ज हैं. ,सबसे हैरानी की बात है कि पहले चरण के 121 में से 91 विधानसभा में 3 से अधिक उम्मीदवारों पर आपराधिक मामले दर्ज हैं. सभी दलों ने अभी भी सियासी घरानों की महिलाओं को आसानी से टिकट दिए हैं.

हालांकि एनडीए की 34 महिला प्रत्याशियों में से 14 सामान्य कार्यकर्ताओं को टिकट दिए हैं जबकि महागठबंधन ने 31 महिलाओं को मैदान में उतारा है. इसमें से 23 महिलाओं का संबंध राजनीतिक घरानों से है. जदयू ने 13 में से 7 महिला कार्यकर्ताओं को टिकट दिए हैं. जबकि इस बार बीजेपी ने तीन गैर राजनीतिक घरानों की महिलाओं को मैदान में उतारा है. यह भी कहा जा रहा है कि चुनाव कोई भी दल जीते लेकिन विधायक एक ही जाति का होगा. क्योंकि राज्य के कई विधानसभा सीटों पर एनडीए और महागठबंधन दोनो ने एक ही जाति के उम्मीदवार को मैदान में उतारा है.

इसका निहितार्थ यह है कि राजनीतिक सुचिता के मद्देनजर जात-पात पर आधारित मतदान रोकने और बाहुबली को टिकट नहीं देने के लिए किसी दल ने कोई ठोस पहल नहीं की. दरअसल, बिहार को अतीत के दल दल से निकालने की कवायद शुरू हुई ही नहीं क्योंकि राजनीतिक दलों को यह चिंता सताने लगती है कि अगर स्वच्छ छवि वाले ज्यादा उम्मीदवारों को टिकट बांटे तो कहीं उनकी सीटों की संख्या न घट जाए. इसी होड़ में में बेदाग और शिक्षित व्यक्ति किसी भी दल के प्रत्याशी नहीं बन पाते हैं.

यूं तो बिहार में फिलहाल बहुत कम बाहुबली राजनीति में हैं लेकिन वर्तमान में अनंत सिंह, सूरजभान सिंह, मुन्ना शुक्ला, आनंदमोहन सिंह और पप्पू यादव जैसे बाहुबलियों का राजनीतिक जमीन बरकरार हैं. इन्होने अपनी पत्नी और बेटों को भी राजनीत के अखाड़े में उतारा है. हालांकि बीजेपी आलाकमान ने इस चुनाव में दस वर्तमान विधायक का टिकट काट कर एक नया संदेश देने की कोशिश की तो जदयू, राजद और कांग्रेस ने भी कुछ सिटिंग विधायक जिनके खिलाफ जन आक्रोश था को बेटिकट कर दिया लेकिन देखने वाली बात होगी कि जनता का मूड क्या होता है. आखिर लोकतंत्र में जनता का वोट ही सर्वोपरि होता है. वहीं, बिहार के बाहुबली अभी भी बिहार की राजनीतिक परिदृश्य को अपने हिसाब से ही चलाने की मंशा रखते हैं. वे कतई नहीं चाहते हैं कि बिहार की आबोहवा में अच्छी राजनीति की शुरुआत हो ताकि उनकी प्रासंगिकता बनी रहे.

यहीं कारण है कि इस चुनाव में आपराधिक प्रवृति वाले 125 निर्दलीय उम्मीदवारों ने अपना नामांकन भर के सबको चौंकाया है. बताया जा रहा है कि इस चुनाव में 55 सीटों पर कांग्रेस का सीधा मुकाबला बीजेपी से है और स्थिति यह है कि इन सीटों पर कांग्रेस की हालत बेहद खराब है. इसके आलावा बताया जा रहा है कि राहुल गांधी और तेजस्वी के बीच शीत युद्ध का माहौल बना हुआ है. दिल मिले न मिले हाथ मिलाते रहिए की स्थिति में महागठबंधन है. सूत्र बताते हैं कि राहुल की इच्छा के विपरीत तेजस्वी को सीएम और मुकेश साहनी को डिप्टी सीएम उम्मीदवार घोषित करके महागठबंधन में असमंजस के हालात बने हुए हैं.

(लेखक नवभारत भोपाल के संपादक हैं)

बंकिमचंद्र चटर्जी के शब्दों ने पूरे देश के लोगों को एक साथ सपने देखने के लिए प्रेरित किया

वन्देमातरम् : एक गीत, एक आत्मा, एक भारत

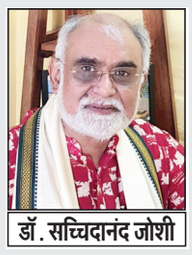

डॉ. सच्चिदानंद जोशी

वन्देमातरम
सुजलांसुफलांमलयजशीतलाम्
शस्यशामलांमातरम् .
शुभ्रज्योत्स्नापुलकितयामिनी
फुल्लकुसुमितदुमदलशोभिनी
सुहासिनी सुमधुर भाषिणी
सुखदांवरदांमातरम् ।।1 ।।
वन्देमातरम् ।
कोटि-कोटि-कण्ठ-कल-कल-निनाद-कराले
कोटि-कोटि-भुजैधृत-खरकरवाले,
अबला केनमाएत बले ।
बहुबलधारिणींनमामि तारिणी
रिपुदलवारिणीमातरम्..2 ..वन्देमातरम् ।

20 नवंबर 1909 को कर्मयोगिन में इस अनुवाद के प्रकाशित होने से करीब बीस वर्ष पहले, वंदे मातरम गीत भारतीय एकता की आत्मा में रच-बस चुका था. रैलियों और घरों में गुनगुनाए जाने वाले इस गीत ने लाखों लोगों के दिलों को प्रांतों और पंथों से ऊपर उठने का आह्वान किया. बंकिमचन्द्र चटर्जी के शब्दों ने पूरे देश को एक साथ सपने देखने के लिए प्रेरित किया, और अरबिंदो के अंग्रेजी अनुवाद ने इसे नई पीढ़ियों और पूरे विश्व तक पहुंचाया, ताकि वे भारत की आजादी की पुकार सुन सकें. कर्मयोगिन में इस कविता का प्रकाशन केवल एक गीत का अनुवाद नहीं था- यह एक आंदोलन का रूप बन गया, जिसने पिछले दो दशकों से भारत को हर तरह के भेदभाव से ऊपर उठकर एक सूत्र में बाँधने की शक्ति दी.

लोगों ने पहली बार वंदे मातरम को 1896 में एक भजन की तरह सुना, जब रवींद्रनाथ ठाकुर ने इसे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कोलकाता अधिवेशन में गाया. उस शाम श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो गए. गीत में विरोध के नहीं, भक्ति के स्वर थे. 10 साल बाद 1905 में, जब बंगाल का विभाजन हुआ और वहां असंतोष फैला, तब रवींद्रनाथ ठाकुर के भतीजे अबनिंद्रनाथ ठाकुर ने भारत माता की तस्वीर बनाई भगवा वस्त्रों में एक स्त्री, जिसके हाथ में अनाज की पुंज, एक पुस्तक और एक माला थी. यह चित्र बंकिमचंद्र के वंदे मातरम की भावना का जीवंत रूप बन गया. यह गीत केवल किसी कवि की कल्पना नहीं था. यह उस आत्मा की पीडा भरी पुकार थी, जो वर्षों से मातृभूमि की रक्षा और अस्तित्व के लिए जूझ रही थी. जब ब्रिटिश हुकूमत लोगों से लॉन्ग लिव द क्वीन कहलवा रही थी, तब बंकिमचन्द्र चटर्जी ने एक ही रात में यह गीत लिखा. यह गीत सदियों के दुख और अपमान का काव्यात्मक उत्तर था-एक गूंजती पुकार, जिसने उस सोए हुए राष्ट्र को जगाने की कोशिश की जो लंबे समय से पीड़ा में सुन्न हो गया था.

कांग्रेस के अधिवेशन से लेकर लाहौर की फॉसी तक, वंदे मातरम् विद्रोह की सांस बन गया. भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद, बटुकेश्वर दत्त और अनेक क्रांतिकारियों ने इसे मौत का सामना करते हुए जोर से पुकारा. सुभाष चंद्र बोस ने इसे आजाद हिंद फौज का मार्चिग धुन बना दिया. यह गीत सभाओं में गूंजता था और जेलों की दीवारों में धीमे स्वर में फुसफुसाया जाता था. इसने संत और सैनिक, विद्वान और किसान, हिंदू और मुस्लिम सभी को एक सूत्र में बांध दिया. यह गीत एक साथ प्रार्थना भी था और विरोध की पुकार भी. वंदे मातरम का पहला अंग्रेजी अनुवाद श्री अरविंदो ने नहीं किया था. कई भारतीय और अंग्रेज विद्वानों ने इस गीत का अंग्रेजी में अनुवाद किया था. इसे उर्दू सहित कई भारतीय भाषाओं में भी अनुवादित किया गया था. डब्ल्यू, एच. ली, जो ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय सिविल सेवा में थे, उन्होंने 1906 में इसका अंग्रेजी अनुवाद किया. जब वंदे मातरम् शब्द बोलला भी प्रतिबंधित कर दिया गया था, तो इसका गुमनाम रूप से अनुवाद किया गया. हालांकि, अरविंदो घोष द्वारा किया गया अंग्रेजी अनुवाद सबसे प्रसिद्ध है, जिसे मूल बांग्ला गीत के साथ प्रकाशित किया गया था.

(लेखक, विचारक और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सदस्य सचिव हैं)

वंदे मातरम् की शक्ति उसकी कल्पना-चित्रों में छिपी है- इसमें भारत कोई सीमाओं वाला देश नहीं, बल्कि जीवंत सांसों से भरा एक अस्तित्व है. इसकी मातृभूमि युद्धभूमि नहीं, बल्कि जीवनदायिनी शक्ति है- उपजाऊ, उज्ज्वल और पालन करने वाली. जब 1905 में अबनिंद्रनाथ ठाकुर ने भारत माता की तस्वीर बनाई, तो उन्होंने इस अस्तित्व को एक चेहरा दिया शांत, आध्यात्मिक और आत्मनिर्भर. यह चित्र, ठीक उसी तरह जैसे गीत, सुंदर भी था और क्रांतिकारी भी, पवित्र भी और विद्रोही भी. बंकिमचंद्र की सबसे बड़ी प्रतिभा यह थी कि उन्होंने देशप्रेम को भक्ति में बदल दिया. भारत से प्रेम करना उनके लिए सिर्फ भूमि से लगाव नहीं था, बल्कि मां की तरह उसकी पूजा करना था भूमि पर अधिकार नहीं, मातृभूमि का आदर था. स्वतंत्रता का गान जब भारत स्वतंत्रता पाने के करीब था, तब तक वंदे मातरम भारत की अवधारणा से अभिन्न रूप से जुड़ चुका था. फिर भी, संविधान सभा में एक बहस छिड़ गई: कौन सा गीत नए गणराज्य का प्रतिनिधित्व करेगा? 1947 में, जन गण को उसकी भाषाई सार्वभौमिकता के कारण राष्ट्रगान चुना गया. लेकिन वंदे मातरम को समान सम्मान के साथ राष्ट्रगीत घोषित किया गया. नेहरू ने इसे हमारे जागरण का गीत कहा था.

भीड़ प्रबंधन से ही टलेंगी भगदड़ मौतें

सीसीटीवी कैमरा लगाकर निगरानी रखी जाए कि कहीं ज्यादा लोगों का जमाव तो नहीं हो रहा है. प्रशिक्षित कार्यकर्ता व पुलिस पूरी एहतियात बरतें. इस वर्ष भगदड़ मौतों की 8 बड़ी घटनाएं हो चुकी हैं.

जब धर्मस्थलों पर होने वाली भगदड़ या अन्य दुर्घटनाओं में श्रद्धालुओं की मौत होती है तो कितने ही लोग सवाल उठाते हैं कि इतने लोगों को वहां एक साथ जाने और भीड़ करने की जरूरत क्या थी? तीर्थस्थान जाने और लौटने के समय भी वाहन दुर्घटना में कुछ लोग प्राण गंवा बैठते हैं. किसी संत-महात्मा या प्रवचनकार से पूछा जाए कि भगवान ने इन लोगों की रक्षा क्यों नहीं की तो उनका जबाब रहता है कि धर्मस्थल पर गए इन जीवों की सदगति हो गई. भगवान ने उन्हें अपने धाम बुला लिया. ऐसे भी जिंदगी का कोई भरोसा नहीं है. मौत कभी न कभी आनी ही है. इस तरह की बात किसी तर्कशील व्यक्ति के गले नहीं उतरेगी. धर्मस्थलों पर पर्व तथा उत्सव के समय भगदड़ मौत की वजह वहां व्याप्त घोर अव्यवस्था, संबंधित लोगों की लापरवाही, आयोजकों व पुलिस का सतर्क नहीं रहना होता है. क्राउड मैनेजमेंट या भीड़ प्रबंधन नहीं होने से धक्का-मुक्की, कुचले जाने, दम घुटने से लोग मरते हैं. आंध्रप्रदेश के श्रीकाकुलम जिले में वेंकटेश मंदिर में भगदड़ से 10 लोगों की मौत हुई. मंदिर के 94 वर्षीय बुजुर्ग मालिक व पुजारी हरि मुकुंद पांडा का यह कथन गैरजिम्मेदारी पूर्ण है कि मैंने अपनी निजी जमीन पर मंदिर बनवाया है. मैं पुलिस या प्रशासन को सूचना क्यों हूं? उस व्यक्ति को चाहिए था कि प्रबोधिनी एकादशी पर उमड़ रही भारी भीड़ को देखते हुए पुलिस को तत्काल सूचित करता. राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की इस संबंध में गाइडलाइन है. यदि धर्मस्थलों के संचालक, ट्रस्टी, प्रबंधक या इवेंट ऑर्गनाइजर इनका पालन करें तो त्रासदी टाली जा सकती है. भीड़ को नियंत्रित करने के लिए कठघरे लगाकर थोड़े-थोड़े लोगों को छोड़ा जाए, प्रवेश और निकासी के मार्ग अलग रखे जाएं. मेला स्थलों, रेल्वे स्टेशनों तथा स्टेडियम में सुरक्षा प्रबंध मजबूत किए जाएं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

फडणवीस ने छेड़ा चुनावी राग बुझी लालटेन, चमकेगा चिराग

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, चुनाव प्रचार में सूझबूझ, कल्पनाशक्ति या इमेजिनेशन बहुत काम आती है. भाजपा के भेजे में ऐसी-ऐसी आइडिया आती हैं कि जनता भी सुनकर बाग-बाग हो जाए. महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने बिहार में एनडीए की चुनावी सभा में कहा कि लालटेन में नहीं बचा तेल, बिहार को चलाना नहीं बच्चों का खेल!'

हमने कहा, 'उन्होंने यह भी छेड़ा कर्णप्रिय चुनावी राग कि बुझी लालटेन, अब चमकेगा चिराग.' हमने कहा, 'बिजली की रोशनी के जमाने में बल्ब, ट्यूबलाइट, हैलोजन लैम्प की बातें होनी चाहिए लालटेन और चिराग तो गुजरे जमाने की चीजें हो गई हैं.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, तेजस्वी यादव की पार्टी राजद का चुनाव चिन्ह लालटेन है जो लालू की विरासत है. दूसरी ओर स्व. रामविलास पासवान के बेटे का नाम चिराग है जिनकी पार्टी लोजपा है. फडणवीस ने कहा कि चमकता हुआ चिराग ही बिहार की जनता को आगे की राह दिखा सकता है. आपको याद होगा कि रामविलास की दूसरी पत्नी के बेटे चिराग ने पहले रील लाइफ में टिमटिमाने की कोशिश की और कंगना रनौत के साथ एक फिल्म में काम किया. फिल्म चली नहीं तो पॉलिटिक्स में आ गए. उनकी पार्टी एनडीए में शामिल है. अपने चाचा पशुपति पासवान को पीछे छोड़कर चिराग ने पार्टी की बागडोर संभाल ली.'

हमने कहा, 'एनडीए का निशाना परिवारवादी राजनीति पर है. लालू- राबड़ी की 9 संतानों में 7 बेटियां और 2 बेटे तेजप्रताप और तेजस्वी हैं. तेजस्वी के तेज से एनडीए को मुकाबला करना होगा. बिहार के चुनाव में यूपी के समान धर्म का मुद्दा नहीं चलता. वहां की राजनीति जातिवाद के जोर पर चलती है. राजद को यादव-मुस्लिम वोटों पर भरोसा है.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, चुनाव प्रचार पूरे शबाब पर है. प्रधानमंत्री मोदी ने तो कल्पना की उड़ान भरते हुए यह भी कह दिया कि राजद ने कांग्रेस की कनपटी पर कट्टा तानकर सीएम पद छीना! मोदी ने दावा किया कि इन दोनों पार्टियों में भयंकर झगड़ा है. चुनाव के बाद ये एक-दूसरे का सिर फोड़ने लगेंगे.'

हमने कहा, 'अपने बेटे जय शाह को धनकुबेर संगठन बीसीसीआई का अध्यक्ष बनाने वाले अमित शाह ने लालू और सोनिया पर पुत्रमोह से ग्रस्त होने का आरोप लगाया. उधर राहुल गांधी ने अपनी सभा में मोदी को निशाने पर लेते हुए कहा कि 56 इंच की छाती वाला डरपोक है. महात्मा गांधी की छाती बड़ी नहीं थी लेकिन वो किसी से डरते नहीं थे. इंदिरा भी किसी से डरती नहीं थीं जबकि ट्रंप ने मोदी को झुका दिया.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, अब टीवी या फिल्म देखने की जरूरत नहीं. नेता अपनी बातों से भरपूर मनोरंजन कर रहे हैं.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12071

-डॉ. सागर खादीवाला

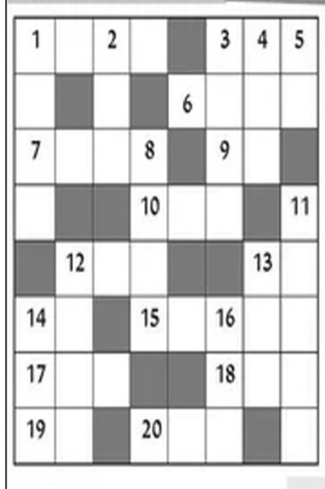

ऊपर से नीचे

1. किसी कार्य की ठीक प्रकार से व्यवस्था करने वाला (मैनेजर) 2. ढोंग, आडंबर 3. कमर में पहनने का गहना 4. बादशाह अकबर के दादा का नाम 5. बंधा हुआ (सं.) 8. घोंसला, आशियाना (उर्दू) 11. राज्याभिषेक, राजा के राज्यारोहण का उत्सव (सं.) 12. खोजना, चाहना 13. कपड़ा, अंग्रेजी में एक धातु का नाम 14. कर्णधार, नाविक, मल्लाह (उर्दू) 16. कुश्ती आदि की प्रतिद्वंदिता, अखाड़ा

बाएं से दाएं

1. प्रसन्न, हर्षित, प्रमोदयुक्त (सं.) 3. सीखों में खोंसकर भूना हुआ मांस (उर्दू) 6. हाथ जोड़े हुए (सं.) 7. अमीर, धनी 9. धारण करने वाला 10. शेर की मादा, बहादुर औरत 12. समाप्त, खत्म, संपूर्ण (उर्दू) 13. काम, प्रयोजन, बटन का छेद 14. गंदे पानी के बहने का मार्ग 15. नवविवाहित पति-पत्नी 17. सुगंध (उर्दू) 18. विष, जहर (सं.) 19. छोटा फल या बीज, अन्नकण, बुद्धिमान 20. विक्षिप्त, जिसका विवेक नष्ट हो गया हो

Solution 12070

ना	ग	पु	र		चे	त	क
म	दा	र		खा	ता	य	न
दे		अ	क	र		ना	स
व	ह	म		दा	र		रि
	ज	न	म	त		ह	या
छि			त		शू	र	
ल	वं	ग	ल	ता		का	न
का	श		ब	र	क	रा	र

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में निर्धारित कार्यो में आकस्मिक रूकावट आयेंगी, व्यर्थ वाद विवाद हो सकता है, व्यय में वृद्धि होगी, मानसिक अशांति रहेगी, वर्ष के मध्य में शासन से लाभ प्राप्त होगा, व्यक्तित्व का विकास होगा, सामाजिककार्यो में ख्याति प्राप्त होगी, वर्ष के अन्त में भागदौड़ से सफ्लता प्राप्त होगी, आर्थिक कार्यो में लाभ प्राप्त होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को पूर्व निर्धारित कार्यो में आकस्मिक रूकावट आयेगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ विवाद होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को शासन से लाभ प्राप्त होगा, तथा व्यक्तिगत संबंधों में मनमुटाव हो सकता है, सिंह राशि के व्यक्तियों को यात्रा आदि से सतर्कता बांछनीय, सामाजिक कार्यो में ख्याति प्राप्त होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को परिश्रम की अधिकता रहेगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को प्रतिस्पर्धा में सफ्लता मिलेगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों की आर्थिक उन्नति होगी, सफ्लता मिलेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक कोमल, सुन्दर, परोपकारी, आकर्षक एवं प्रभावशाली होगा, शिक्षा में अग्रणी होगा, अपने कार्य के प्रति सचेत एवं माता पिता का मार्गदर्शन लेने वाला होगा, प्रतिभाशाली और पराक्रमी होगा.

मेष- अधिकारियों का सहयोग न मिलने से परेशानी होगी, आय का नया मार्ग प्रशस्त होगा, स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें, पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी.

वृषभ- आत्मशक्ति से बड़े कार्य में सफ्लता मिलेगी, छोटी-मोटी बातों पर उत्तेजित होकर अपना कार्य न बिगाड़े, आर्थिक मामले को लेकर यात्रा होगी.

मिथुन- कानूनी मामले उलझेंगे, लेनदेन के मामलों में आरोप लग सकते हैं. आर्थिक एवं सामाजिक कार्यो में सफ्लता का योग है, संतान के कार्यो में ध्यान देना पड़ेगा.

कर्क- नए कार्य की शुरूआत में दिक्कत होगी, मामूली बात पर मित्रों से कहासुनी हो सकती है. आर्थिक सफ्लता मिलेगी. विलासिता की वस्तुओं का संचय होगा.

सिंह- गलतियां सुधार कर आगे बढ़ें, सफ्लता की राह आसान होगी. संतान के संबंध में सुखद समाचार मिलेगा, ऐसा कार्य बनेगा, जिससे आर्थिक समृद्धि होगी.

कन्या- जीवनसाथी केव्यवहार से खिन्नता होगी, नए संपर्को का लाभ मिलेगा, मैत्री संबंधों में सुधार होगा, समस्याओं का निराकरण होगा.

तुला- शुभ समाचार मिल सकते हैं, अटका धन मिलने के आसार हैं, धन मान-सम्मान में वृद्धि होगी, अचानक नए कार्य की रूपरेखा बनेगी, सम्मान प्राप्त होगा.

वृश्चिक- जिद में आकर आप अपना नुकसान कर सकते हैं, कोई ऐसा कार्य बनेगा, जिससे मानसिक प्रसन्नता होगी, विवादों को टालने का प्रयास करें.

धनु- भावनात्मक रिश्तों में चल रहे गतिरोध से निराशा होगी, आय के साधनों में वृद्धि होगी, नए कार्य की रूपरेखा पर विचार विमर्श होगा, संयम रखें.

मकर- नई जिम्मेदारी मिलने की संभावना है, जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा, व्यर्थ की चिन्ता रहेगी, मनोरजन आदि पर खर्च होगा.

कुम्भ- जो लोग आपसे नाराज चल रहे थे, उनका सहयोग मिलेगा, मानसिक तनाव दूर होगा, रोगी की चिन्ता रहेगी, कार्य की अधिकता रह सकती है.

मीन- दूसरों के कार्यो में दखल न करें, परिश्रम अधिक करना होगा, साझेदारी में सतर्कता बांछनीय, सामाजिक कार्यो में सफ्लता का योग है, पारिवारिक सुख संतोष रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

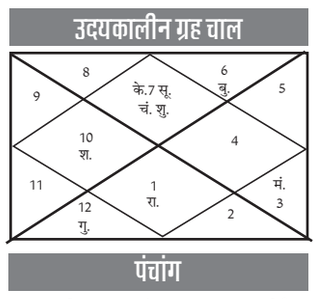

पंचांग

रा.मि. 14 संवत् 2082 कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा बुधवासरे रात 7/16, अश्विनी नक्षत्रे दिन 10/20, सिद्धि योगे दिन 1/0, विष्टि करणे सू.उ. 6/30, सू.अ. 5/30, चन्द्रचार मेष, पर्व- स्नानदान व्रत पूर्णिमा, शु.रा. 1, 3, 4, 7, 8, 11 अ.रा. 2, 5, 6, 9, 10, 12 शुभांक- 3, 5, 9.

व्यापार भविष्य

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को अश्विनी नक्षत्र के प्रभाव से जीरा, धनियां, लालमिर्च, दाख, जायफल, लौंग, के भाव में अच्छी तेजी होगी. गेहूँ, जौ, चना, मूँग, मोट, ज्वार, बाजरा के भाव में नरमी होगी. भाग्यांक 2638 है.

SUDOKU 7203

9		2		4	1	7		
1						6		
5	7	3	2				4	
				9	4	8		
4		7				9		6
		5	8	3				
	3				6	5	9	1
		6						7
		9	1	8		2		4

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7202

5	4	9	1	8	3	2	6	7
1	2	6	4	9	7	3	5	8
3	8	7	5	2	6	1	4	9
8	7	1	3	4	2	6	9	5
9	5	3	6	1	8	7	2	4
2	6	4	7	5	9	8	1	3
4	3	5	2	7	1	9	8	6
6	9	2	8	3	4	5	7	1
7	1	8	9	6	5	4	3	2